B.A. (Part I) EXAMINATION, 2019

(Faculty of Arts)

(For Non-Collegiate Candidates)

HINDI LITERATURE-I

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र : आदिकाल एवं भक्तिकाल

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये-

(क) कान्ह भये बस बाँसुरी के अब कौन सखी हमकों चहि है। (10)

निस धौस रहै संग साथ लगी यह सौतिन तापन क्यों सहिहै।

जिन मोहि लियो मनमोहन को रसखानि सदा हमकों दहिहै।

मिलि आओ सखी सब भाग चलै अब तो ब्रज मैं बाँसुरी रहिहै॥

अथवा

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना।

ले मटुकी सिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्दजी के छोना।

दधि को नाम बिसारि गयो प्यारी, ले लेहु री कोई स्याम सलोना।

बिंद्रावन की कुंज-गलिन में, नेह लगाइ गयो मन-मोहना।

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुधर रस-लोना॥

(ख) पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै। (10)

झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै॥

फिरि बूझति है "चलनो अब केतिक, पर्न-कुटी करिहौ कित ह्वै ?"।

तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अतिचारु चली जलच्वै॥

अथवा

कहा भयौ तिलक गरै जपमाला।

मरम न जानै मिलन गोपाला॥

दिन प्रति पसू करै हरि हाई, गरै काठ बाकी बाँनि न जाई।

स्वांग सेत करणीं मणि काली, कहा भयौ गलि माला घालीं।

बिन ही प्रेम कहा भयौ रोयैं, भीतरि मैल बाहरि कहा धोये।

गलगल स्वाद भगति नहीं धीर, चीकन चंदवा कहै कबीर।

(ग) ऊधो! अँखियाँ अति अनुरागी। (10)

इकटक मगजोवति अरु रोवति भूलेहु पल न लागी॥

बिन पावस पावस् ऋतु आई, देखत हौ बिदमान।

अब धौं कहा कियो चाहत हों ? छोड़तु नीरस ज्ञान॥

सुनु प्रिय सखा स्यामसुन्दर के जानत सकल सुभाव।

जैसे मिलै सूर प्रभु हमको सौ कहु करहु उपाव॥

अथवा

कुंज-भवन सैं चलि भेलि हे,

रोकल गिरधारी।

एकहि नगर बसु माधव हे,

जनि कर बटमारी।

छाड़ कान्ह मोर आँचर दे,

फाटत नव सारी।

अपजस होएन जगत भरि हे,

जनि करिअ उधारी।

संगक सखि अगुआइलि रे,

हम एकसार नारी।

दामिनि आय तुलाइलि हे,

एक राति अँधारी।

भनहि विद्यापति गाओल रे,

सुनु गुनमति नारी।

हरिक संग किछु डर नहिं हे,

तुझे परम गमारी॥

(घ) ढाढी, एक सँदेसड़उ, ढोलइ लगि लइ जाइ। (10)

जोवण फाट्टि तलावड़ी, पाळि न बंधउ काँइ॥

पंथी एक सँदेसड़उ, लग ढोलउ पैहचाइ।

विरह महादव जागियउ, अगिन बुझावउ आइ॥

अथवा

राज काज दाहिम्म। रहै दरबार अप्प बर॥

आषेटक दिल्लिय। नरेस षेलै कमंध डर॥

देस भार मंत्रीस। राव उद्धा सु धारे॥

न को सीम चंपवै। हद्द तपै सु करारै॥

लोपौ न लीह लज्जा सयल। स्वामि धम्म रण्षै सुरुष॥

क्रम नीति रीति बडढै बिसह। बंछै लोक असोक सुष॥

2. जायसी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। (16)

अथवा

मीराँ के काव्य-सौन्दर्य की सोदाहरण समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।

3. रसखान की प्रेमपूरित भक्ति-भावना की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। (16)

अथवा

"सूरदास वात्सल्य और शृंगार का कोना-कोना झाँक आये हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. तुलसीदास की भक्ति-भावना पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। (16)

अथवा

"कबीर कवि की अपेक्षा समाज-सुधारक अधिक थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं दो विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये- (6×2=12)

(i) आदिकाल की परिस्थितियाँ

(ii) कृष्ण-भक्ति काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ

(iii) संत काव्य-परम्परा की प्रवृत्तियाँ

(iv) राम-भक्ति काव्य की विशेषताएँ